6

लोकगीत

(क)

गढ़वाली लोकगीत

यह गीत उत्तराखंड का लोक गीत है, जो कि उत्तराखंड में होने वाले मेलों अथवा पर्वों में गाया जाता है। जिस प्रकार कई बार गीत में तुकबंदी के लिये निरर्थक शब्दों का प्रयोग होता है, उसी प्रकार इस गीत में भी ऐसे शब्दों का प्रयोग मिलता है।

इस गीत में युवक-युवती के बीच गीत के माध्यम से संवाद हो रहा है, जिसमें युवक कहता है कि मेरे गांव में मेला लगा है और आप भी उस मेले को देखने आइये। तब युवती कहती है कि यह समय जेठ की बारा गति का है और इस समय आपके गांव के खेतों में गेहूं की फसल लगी है, जो दिखने में सुन्दर लगती है। इसलिये मैं भी मेले को देखने आ रही हूँ। प्रस्तुत गीतों के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिए साथ में उपलब्ध सीडी को सुनें।

उद्देश्य

पाठ के अभ्यास के पश्चात् विद्यार्थी :

- लोकगीत की पृष्ठभूमि एवं शैली का वर्णन कर पायेंगे;
- प्रस्तुत लोकगीत को प्रदर्शित कर पायेंगे;
- प्रस्तुत लोकगीत के बोलों का वर्णन कर पायेंगे;
- प्रदेश के लोकगीत को पहचान पायेंगे।

1) लै पाकी जाला केलमा लै पाकी जाला केला
लै तू भी आई जाणू रे मेरा गौं का मेला
हो निलिमा मेरा गौं का मेला।

2) लै तीलू मां का तेलमा लै तीलू मां का तेला
ओ बीरूमां बीरूमां लै तीलू मां का तेला
लै कति गति ओंदी रे तैरा गौं का मेला
ओ बीरूमां बीरूमां तेरा गौं का मेला।

टिप्पणी

3) लै गेहूं जौ का लेटा मा, लै गेहूं जौ का लेटा
ओ निलिमा निलीमा लै गेहूं जौ का लेटा
लै तेरा गौं का मेला रे बारा गति जेठा
ओ निलिमा निलिमा बारा गति जेठा।

4) लै कुकड़ी को बीटा मा लै कुकडी को बीटा
ओ बीरूमा बीरूमा लै कुकड़ी को बीटा
लै तेरा गौं का मेला रे छकी ल्यूला गीता
ओ बीरूमा बीरूमा छकी ल्यूला गीता।

5) लै पीतैले पराता मां लै पीतैले परात
ओ निलीमा निलीमा लै पीतैले पराता
यनि लौंणा गित रे यखी खुल्या रात
ओ निलीमा निलीमा यखी खुल्या रात।

6) लै दही की जामुणां मां लै दही की जमुणा
ओ बीरूमा बीरूमा लै दही की जमुणा
लै तेरा गौं का मेला रे क्या देली सामुणा
ओ बीरूमा बीरूमा क्या देली सामुणा।

7) लै गीत लाई झुमैला मा लै गीत आई सुमेला
ओ निलीमा निलीमा लै गीत आई सुमेला
सामोणा मां द्यूलू रे अपुणु रूमैला
ओ निलीमा निलीमा अपुणु रूमैला।

8) लै कन्डाली को हेरा मा लै कन्डाली को हेरा
ओ बीरूमा बीरूमा लै कन्डाली को हेरा
यखुली यखुली रे मैं लगदी का डेरा
ओ बीरूमा बीरूमा मैं लगदी का डेरा।
ओ निलिमा निलीमा मेरा गौं का मेला
ओ बीरूमा बीरूमा तेरा गौं का मेला।

टिप्पणी

स्वरलिपि

खेमटा ताल

X			0			X			3		
											साग (लैऽ)
ग	प	म	म	ऽ	प	प	प	म	ग	सा	ग
पा	की	ऽ	जा	ऽ	ला	कै	ल	मा	ऽ	लै	ऽ
ग	म	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	नि	–
पा	की	ऽ	जा	ऽ	ला	कै	ऽ	ला	ऽ	ओ	ऽ
नि	सां	नि	सां	सां	सां	नि	प	म	ग	सा	ग
नी	ली	ऽ	मा	ऽ	ऽ	नी	ली	मा	ऽ	लै	ऽ
ग	म	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग		
पा	की	ऽ	जा	ऽ	ला	कै	ऽ	ला	ऽ		
										सा	ग
										लै	ऽ
ग	प	म	म	–	प	प	प	म	ग	सा	ग
तू	भी	ऽ	आ	ऽ	ई	जा	णू	रे	ऽ	मे	ऽ
ग	म	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	नि	ऽ
रा	गौं	ऽ	का	ऽ	ऽ	मे	ऽ	ला	ऽ	ओ	ऽ
नी	सां	नि	सां	सां	सां	नि	प	म	ग	सा	ग
नी	ली	ऽ	मा	ऽ	ऽ	नी	ली	मा	ऽ	मे	ऽ
ग	म	–	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ऽ	ऽ
रा	गौं	ऽ	का	ऽ	ऽ	मे	ऽ	ला	ऽ	–	–

(अन्य अंतरे इसी प्रकार गाये जायेंगे)

पाठगत प्रश्न 6.1

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

1. उत्तरांचल का गढ़वाली लोक गीत ''लै पाकी जाला केलमा'' ..... तथा ..... के समय गाया जाता है।
2. गीत में ..... और ..... के बीच संवाद है।
3. गीत में ..... के लिए अर्थहीन शब्दों का प्रयोग होता है।

टिप्पणी

(ख)

हरियाणवी लोक गीत

इस प्रकार के लोकगीत सामाजिक शिक्षाप्रद गीतों की श्रेणी में आते हैं जिनमें दी गई शिक्षा को अगर हम असल जीवन में उतारें तो वह हमारे लिये बहुत फायदेमंद तो साबित होती ही है, हम उन बहुत सारी परेशानियों से भी बच जाते हैं जो हमारे जीवन में आती हैं। इन गीतों का गायन हर मौसम व हर उत्सव पर किया जाता है। बच्चे, जवान व बूढ़े इन गीतों को बड़े चाव से सुनते हैं। इस गीत का भाव इस प्रकार है कि ज्ञानी अथवा विद्वान व्यक्ति को अगर कोई अच्छी बात बताई जाए तो वह उसे ठीक से अमल में लाकर उसका फायदा उठाता है, लेकिन मूर्ख व्यक्ति को अच्छी शिक्षा बार-बार भी दी जाए तो भी वह उसे ठीक से नहीं अपनाता, पारस्परिक लड़ाई-झगड़े में अपना जीवन व्यर्थ गंवा देता है तथा उस शिक्षा से प्राप्त होने वाले लाभ से वंचित रह जाता है।

हरियाणवी लोक गीत

ज्ञान की बाते सुणे ज्ञानी तो समझे एक इशारे तै।
नुगरा मानस माणे कोन्या सौ-सौ रूकै मारे तै।।

कैरा माणस काला ढोरी घर पाछे ने मोरी हो।
उस लाठी का नहीं भरोसा जिसकी लाम्बी पोरी हो।
सास बहू ते झगड़म झगड़ा नहीं काम की गोरी हो।
घर क्यां ने समझानी चाहिये जो बड़बोला छोरी हो।।
भाई-भाई रहें झगड़ते सबकी गाली खाते हैं।
नुगरा मानस जागे कोन्या सौ सौ रूकै मारे तै।

भगवां बाणा धारण करके न्यूं के साधु होए आ केरे।
कोई कोई साधु वो बणज्या जो घर ते बाधु हुआ करैं।
बिना भजन का साधू तै एक टट्टू लादू हुआ करै।
असली साधु धोरे हरिभजन का जादू हुआ करै।
भक्ति भाव बिना कनफाड़े मांगें टूक द्वारे तै।
नुगरा मानस माणे कोन्या सौ-सौ रूकै मारे तै।।

टिप्पणी

हरियाण्वी लोक गीत

स्वरलिपि

ताल - कहरवा - (8 मात्रा)

स्थायी

X				0			
				पप	पप	ध ध	पमग
				ज्ञान	की बात	सुनै	ज्ञानी तो
गमप	मग	रेग	रेस	ग ग	रे स	नि ध	सासा
समझै	एक	इशारे	तैऽ	नुगरा	मानस	मानै	कोन्या
सरे	गम	गसरे	गस				
सौसौ	रुके	मारेऽ	तैऽ				

अन्तरा 1

				पप	पप	पप	पप
				कैरा	माणस	काला	ढ़ोरी
पध	धनि	धप	न	मम	मम	मम	मम
घर	पाछे	नमोरी	हो	उस	लाठी	कानहीं	भरोसा
गम	मप	मम	म				
जिसकी	लाम्बी	पोरी	हो				

अन्तरा 2

				ग ग	ग ग	रेग	ग ग
				सास	बहु	तैझग	ड्मझगड़ा
सरे	रेग	रेस	स	गम	गग	रेग	गग
नही	कामकी	गोरी	हो	घरक्यां	नेसम	झाणी	चाहिये
सरे	रेग	रेस	स				
जोबड़	बोला	छोहरी	हो				

टिप्पणी

अन्तरा 3

				पप	पप	धध	पमग
				भाई	भाई	रहैझग	ड़ते
गमप	मग	रेग	रेस	गग	रेस	–	–
सबकी	गाली	खाते	हैंऽ	नुगरा	माणस	–	–

अन्तरा 4

X 0

				पप	पप	पप	पप
				भगवा	बाणा	धारण	करके
पध	धनि	धप	मा				
न्यूके	साधु	हुया	करै				
				मम	मम	मम	मम
				कोई–2	साधु	वो बण	ज्याजो
गम	मप	मम	मा				
धरपै	बाधु	होएआ	करै				

अन्तरा 5

0

				ग ग	ग रे	ग ग	ग ग
				बि ना	भजन	का साधु	नै एक
X							
सारे	रे गा	रे सा	स	ग ग	ग रे	ग ग	ग ग
टट्टू	लाटू	हुआ	करै	असली	साधु	धोरे	हरि
सारे	रेगा	रेसा	स				
भजन	का जादू	हुआ	करै				

अन्तरा 6

0

				पप	पप	धध	पम
				भक्ति	भाव	बिना	कनफाड़े
X							
गम	मग	रेसा	रेसा	ग ग	रेस		
मांगेंऽ	टूक	द्वारे	तैऽ	नुंगरा	माणस		

पाठगत प्रश्न 6.2

1. ''ज्ञान की बात सुणे ज्ञानी'' इस गीत का सारांश लिखिए।
2. ''ज्ञान की बात सुने ज्ञानी'' यह गीत किस मौसम में गाया जाता है।
3. इस प्रकार के लोक गीत किस वर्ग में आते हैं? लिखिए।

टिप्पणी

(ग)

पंजाबी लोकगीत (जिंदुआ)

यह पंजाबी लोक गीत 'पंजाब' में 'जिंदुआ' के नाम से प्रसिद्ध है। इस गीत में जीवन के साधारण पक्षों पर बात करते हुए सहजता का आनन्द लिया गया है। विभिन्न शहरों जैसे- पटियाला, करनाल और मुल्तान (पाकिस्तान) आदि की विशेषताओं का वर्णन भी इस गीत में मिलता है। उदाहरण के रूप में पटियाला के प्रसिद्ध रेशमी नाड़े तथा मुल्तान के पहलवानों तथा उनकी खुराक के बारे में वर्णन किया गया है जिससे कि वे बहुत ताकतवर हैं। इसके अतिरिक्त आम के पेड़ की खूबसूरती की तुलना पंजाब की जट्टियों (औरतों) से की गई है। और इस गीत में पंजाब की मीठी बोली की अत्यधिक सराहना करते हुए महत्व दिया गया है।

1. जिंद माई बाज तेरे कुम्लाईयां
तेरियाँ लाडलियाँ परजाईयाँ
बे बागी फेर कदे न आईयाँ
वे इक पल बह जाणा मेरे कोल
तेरे मिठड़े ने लगदे बोल

2. जिंद माई जे चल्यों पटियाले
ओत्थो लियांवीं रेशमी नाले
वे अद्दे चिट्टे ते अद्दे काले
वे गल्ला करनी की दुनिया वाले
वे इक पल वह जाणा मेरे कोल
तेरे मिठड़े ने लगदे बोल

3. जिंद माई अम्बियाँ नू लग गया बूर
वे जप्पीया दे मुखड़ा ते वरदा नूर
जिनू वेखके चढ़े सरूर
वे ईक पल बह जाणा....

4. जिंद माई जे चल्यो मुल्तान,
ओथे वड़े-वड़े पहलवान
वे मारण मुक्की ते, मारण मुक्की ते कढढन जाण
वे खादे गिरियां ते बदाम
वे इक पल बह जाणा मेरे...

टिप्पणी

5. जिद माई जट्टिया खेत वल आईयाँ
नक कोका कन्नी बलियाँ पाईयाँ
अँखियाँ कजले दे नाल सजाईयाँ
इक पल बह जाणा मेरे मखना
तेरे बाजो वेहड़ा सखना

6. जिंद माही जे चली यूं परदेस
का देवी पूल्ली ना अपना देस
के अपनी बोली ते अपना वेस
इक पल बह जाणा मेरे चंदा
वी छोड़ा दो दिलां दा मंदा

स्वरलिपि

ताल - कहरवा (8 मात्रा)

प्रारम्भिक संगीत हारमोनियम पर

1	2	3	4	5	6	7	8
ग	–	–	–	रें	–	–	–
सं	–	–	रें	ध	–	सं	–
गं	–	–	–	रें	–	–	–
सं	–	–	–	–	–	–	–
X				0			

पूरा टूकड़ा दो बार

1	2	3	4	5	6	7	8
–	–	–	सं	सं	सं	रें	गं
			वे	जिं	द	मा	ई
सं	रें	रें	गं	गं	–	रें	–
बा	ऽ	ज	ते	रे	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	सं	सं	सं	रें	गं
ऽ	ऽ	ऽ	वे	जिं	द	मा	ई
सं	रें	रें	गं	गं	–	रें	–
बा	ऽ	ज	ते	रे	ऽ	कु	म
ध	सं	सं	सं	सं	सं	रें	गं
ला	ई	आं	वे	ते	री	यां	ऽ

सं	रें	रें	गं	गं	–	रें	–
ला	ऽ	ड	ली	यां	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	सं	सं	सं	रें	गं
ऽ	ऽ	ऽ	वे	ते	री	यां	ऽ
सं	रें	रें	गं	गं	–	रें	रें
ला	ऽ	ड	ली	यां	ऽ	प	र
ध	सं	सं	सं	सं	सं	रें	गं
जा	ई	यां	वे	बा	ऽ	न	ऽ
सं	रें	रें	गं	गं	–	रें	–
फे	ऽ	र	क	दे	ऽ	न	ऽ
ध	सं	सं	सं	सं	रें	रें	गं
आ	ई	यां	वे	इ	क	प	ल
सं	रें	रें	गं	गं	–	रें	रें
ब	ह	जा	ऽ	णा	ऽ	मे	रे
ध	सं	सं	सं	सं	रें	रें	गं
को	ऽ	ल	वे	ते	ऽ	रे	ऽ
सं	रें	रें	गं	गं	गं	रें	–
मि	ठ	डे	ने	ल	ग	दे	ऽ
ध	सं	–	–	–	सं	गं	रें
बो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ओ	ऽ
सं	–	गं	रें	सं	–	गं	रे
ओ	ऽ	ओ	ऽ	ओ	ऽ	ओ	ऽ
ओ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
X				0			

शेष अन्तरे इसी प्रकार हारमोनियम के piece के साथ बारी-बारी इसी स्वरलिपि के आधार पर गाए जाऐंगे।

पाठगत प्रश्न 6.3

सही प्रश्न चुनिए।

1. दिए हुए पंजाबी लोकगीत का नाम

   (i) जिंदुआ (ii) सारीगान (iii) भांगड़ा

2. इस गीत में पंजाबी युवतियों की तुलना किस के साथ की गयी है।

   (i) फूल (ii) आम का पेड़ (iii) मछली

3. इस गीत में किसकी प्रशंसा करते हुए उसे महत्व दिखा गया है।

   (i) पंजाबी खाना (ii) पंजाबी वस्त्र (iii) पंजाबी भाषा

टिप्पणी

(घ)

बंगाली लोक गीत

सारीगान

सारी गान बंगाल में प्रचलित लोक गीतों में से एक है, जिसे पश्चिम बंगाल एवं बंगलादेश में भी गाया जाता है। यह तेज़ लय में गाया जाने वाला गीत है, जो अधिकतर नाविकों द्वारा नौका दौड़ के समय गाया जाता है। प्रस्तुत गीत दादरा ताल में बद्ध है। इसके साथ दो-तारा तथा तबला वाद्यों का प्रयोग होता है। इस गीत में जो नाविकों का प्रमुख माझी है, वह अन्य नाविकों को नौका जल्दी चलाने के लिये प्रेरित कर रहा है।

स्थायी

रुपसी नोदीर नाव

सुजान माझीर नाव

तरतराइया जाय हाय रे

कोन बा देशे उजान बाइया जाय रे।।

अंतरा

आरे हेइ समालों हेइयो

आरे तागोद दिया बाइयो

फूलमोतीर केरामोती उईड़ा देखाइयो, हायरे

कोन बा देशे उजान बाइया जाय रे।।

संचारी

बुड़ा मियांर बेटा रे भाई, काइला चाचार लाती

जान दिया बाइयो रे मोन फूइल्ला बुकेर छाती।।

आभोग

आरे बोइठा मारो हेइयो

आरे शक्तो हाते बाइयो

मयनामोती उजान गांगे शन-शनाइया जाय, हाय रे

कोन बा देशे उजान बाइया जाय रे।।

टिप्पणी

सारी गान (बंगाल)

स्वरलिपि ताल – दद्रा (6 मात्रा)

स्थायी

X			0			X			0		
सा	सा	सा	सा	रे	रे	ग	–	ग	–	–	–
रू	प	सी	नो	दी	र	ना	ऽ	व	ऽ	ऽ	ऽ
सा	सा	सा	सा	रे	रे	ग	–	ग	–	–	–
सु	जा	न	मा	झी	र	ना	ऽ	व	ऽ	ऽ	ऽ
प	प	प	प	नि	नि	ध	–	प	म	म	ग
त	र	त	रा	इ	या	जा	ऽ	य	हा	य	रे
सा	–सा	सा	रे	ग	–	सा	सा	सा	रे	ग	ग
को	ऽन्	बा	दे	शे	ऽ	उ	जा	न	बा	इ	या
रे	ग	रे	सा	–	–	–	–	–	प	प	ध
जा	ऽ	य	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ऽ	रे

अंतरा

X			0			X			0		
सां	सां	सां	सां	सां	–	सांसां	सां	ध	प	–	ध
हे	इ	सा	मा	लो	ऽ	हेइ	यो	ऽ	आ	ऽ	रे
सां	सां	सां	सां	सां	–	सांसां	सां	–	–	–	–
ता	गो	द	दि	या	ऽ	बाइ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नि	–	रें	सां	सां	सां	नि	नि	सां	नि	ध	प
फू	ऽ	ल	मो	ती	र	के	रा	ऽ	मो	ती	ऽ
प	प	प	नि	ध	–	प	प	म	म	ग	रे
उ	इ	ड़ा	ऽ	दे	ऽ	खा	इ	यो	हा	य	रे

टिप्पणी

सा	–सा	सा	रे	ग	–	सा	सा	सा	रे	ग	ग
को	ऽन्	बा	दे	शे	ऽ	उ	जा	न	बा	इ	या
रे	ग	रे	सा	–	–	–	–	–	–	–	–
जा	ऽ	य	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

संचारी

X			0			X			0		
सा	सा	सा	सा	प	प	सा	सा	सा	सा	प	प
बु	ड़ा	ऽ	मि	यां	र	बे	टा	ऽ	रे	भा	ई
सा	सा	सा	सा	सा	रे	रे	ग	–	–	–	–
का	इ	ला	चा	चा	र	ला	ती	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	प	प	प	नि	ध	ध	प	म	ग	ग
जा	ऽ	न	दि	या	ऽ	बा	इ	यो	रे	मो	न
सा	सा	सा	रे	ग	ग	रे	सा	–			
फू	इ	ला	बु	के	र	छा	ती	ऽ			

आभोग

X			0			X			0		
									प	–	ध
									आ	ऽ	रे
सां	सां	सां	सां	सां	–	सांसां	सां	ध	–	–	–
बो	इ	ठा	मा	रो	ऽ	हेइ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

इसी प्रकार अन्तरे की तरह गाये जाएंगे।

पाठगत प्रश्न 6.4

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. सारी गान ..... तथा ..... का एक प्रचलित लोकगीत है।
2. सारी गान ..... गति में गाया जाता है।
3. सारी गान में ..... तथा ..... का संगति वाद्य के रूप में प्रयोग होता है।

टिप्पणी

(ङ)

लोकगीत (छत्तीसगढ़)

इस गीत के अन्तर्गत छत्तीसगढ़ की महिमा का बखान है। गीत का गायन कोई व्यक्ति विशेष नहीं करता बल्कि कोई भी जाति के स्त्री या पुरुष समूह में गाते हैं। इस गीत को छत्तीसगढ़ राज्य बनने के पूर्व से ही गाया जाता रहा है। इसमें छत्तीसगढ़ की शोभा बढ़ाने में वहाँ की नदियाँ, पहाड़ खेत, खलिहानों का विशेष वर्णन है तथा कुछ मुख्य जिलों का वर्णन है। उक्त बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

स्थायी

अरपा पैरी के धार महानदी हे अपार
इन्द्रावती हा पखारे तोर पईयाँ
जय हो जय हो छत्तीसगढ़ भुईयां
जय हो जय हो छत्तीसगढ़ भुईयां
महुं बिनती करनवा तोरे भुईयां

1. सोहे बिंदिया सही घाटे डोंगरी पहाड़
चंदा सूरूजै बनै तोर नैना
सोनहा धान से अंग लुगरा हरियर हे रंग
तोरे बोली हावै सुघर नैना
अचरा तोरे डोलावै पुरवइया
महुं पांव पड़व तोरे भुईयां
जय हो जय हो छत्तीसगढ़ भुईयां

2. रइगढ़ हावे सुहार तोरे मंऊरे मुकुट
सरगुजा अऊ बिलासपुर हे बैहा
रइपुर कनिहा सही घाटे सुघर हवे
दुरूग बस्तर सोहे पैजनिया
नांदेगावे नवागढ़ धनिया
महुं पावे पड़व तोरे भुईयां
जय हो जय हों छत्तीसगढ़ भुईयां

टिप्पणी

स्वरलिपि

स्थायी **ताल : रूपक**

(7 मात्रा)

X			2		3	
			ध़	सा	सा	–
			अ	र	पा	ऽ
रे	म	–	म	–	–	ग
पै	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	के
रे	सा	–	ध़	सा	सा	–
धा	ऽ	र	म	ऽ	हा	ऽ
रे	म	–	म	–	–	ग
न	हो	ऽ	हे	ऽ	ऽ	अ
रे	सा	सा	ग	–	प	–
पा	ऽ	र	इं	ऽ	न्द्रा	ऽ
ध	ध	–	ध	–	–	ध
व	ती	ऽ	हा	ऽ	ऽ	प
<u>नि</u>	ध	–	प	ग	<u>नि</u>	ध
खा	रे	ऽ	तो	ऽ	ऽ	रे

X			2		3	
प	<u>नि</u>	ध	प	–	म	ग
पै	ऽ	ऽ	यां	ऽ	ऽ	ऽ
रे	सा	–	सा	–	रे	–
ऽ	ऽ	ऽ	जय	ऽ	हो	ऽ

टिप्पणी

प	–	–		प	ध	–	–
जय	ऽ	ऽ		हो	ऽ	ऽ	ऽ
प	म	ग		–	रे	–	ग
छ	त्ती	स		ऽ	ग	ऽ	ढ़
–	रे	–		–	सा	–	–
ऽ	भुं	ई		ऽ	यां	ऽ	ऽ
सा	–	रे		–	प	–	–
म	ऽ	हुं		ऽ	बि	न	ऽ
म	प	ध		प	–	म	ग
ती	ऽ	ऽ		क	रं	व	ऽ
–	रे	–		ग	–	रे	–
तो	ऽ	रे		ऽ	भु	ई	ऽ
–	सा	–					
यां	ऽ	ऽ					

अंतरा-1

				ग	प	प	–
				सो	ऽ	हे	ऽ
ध	सां	–		सां	–	–	नि
बिं	दि	ऽ		या	ऽ	ऽ	स
X				2		3	
ध	प	–		ग	–	प	–
ही	ऽ	ऽ		घा	ऽ	ट	ऽ
ध	नि	–		ध	–	–	प
डों	ग	ऽ		री	ऽ	ऽ	प

टिप्पणी

प	–	–		ग	–		प	–
हा	ऽ	ड़		चं	ऽ		दा	ऽ
ध	ध	–		ध	–		–	ध
सू	रु	ऽ		जै	ऽ		ऽ	ब
निध	पग	–		ग	नि		ध	नि
नैऽ	ऽऽ	ऽ		तो	ऽ		ऽ	रे
प	ध	–		प	–		म	ग
नै	ऽ	ऽ		ना	ऽ		ऽ	ऽ
रे	सा	–		ध	सा		सा	–
ऽ	ऽ	ऽ		सो	न		हा	ऽ
रे	म	–		म	–		–	ग
धा	ऽ	ऽ		न	ऽ		ऽ	से
रे	सा	–		ध	सा		सा	–
अं	ग	ऽ		लु	ग		रा	ऽ
रे	म	–		म	–		–	ग
ह	रि	ऽ		य	र		हे	ऽ
रे	सा	सा		ग	–		प	–
रं	ग	–		तो	ऽ		रे	ऽ
X				2			3	
ध	–	–		ध	–		–	ध
बो	ऽ	ऽ		ली	ऽ		ऽ	हा
निध	पग	–		ग	नि		ध	नि
वेऽ	ऽऽ	ऽ		सु	ऽ		घ	र
प	ध	–		प	–		–	–
नै	ऽ	ऽ		ना	ऽ		ऽ	ऽ

टिप्पणी

ग	प	प	–	ध	सा	–	
अ	च	रा	ऽ	तो	ऽ	ऽ	
सां	–	–	रेंसां	नि	–	–	
रे	ऽ	ऽ	डोऽ	ला	व	य	
ध	–	प	–	प	नि	ध	
पु	ऽ	र	ऽ	व	ई	ऽ	
प	–	म	म	ग	रे	सा	
या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
सा	–	रे	–	प	–	–	
म	ऽ	हुँ	ऽ	पा	ऽ	ऽ	
प	ध	–	–	प	म	ग	
व	ऽ	ऽ	प	ड़	व	ऽ	
–	रे	–	ग	–	रे	–	
तो	ऽ	रे	ऽ	भु	ई	ऽ	
–	सा	–					
यां	ऽ	ऽ					

अंतरा-2

X			2		3		
			ग	प	प	–	
			र	इ	ग	ढ़	
ध	सां	–	सां	–	–	नि	
हा	ऽ	ऽ	वे	ऽ	ऽ	सु	
ध	प	–	ग	–	प	–	
घ	र	ऽ	तो	ऽ	रे	ऽ	

टिप्पणी

ध	नि	–	ध	–	–	प	
म	ऊं	ऽ	रे	ऽ	ऽ	मु	
प	–	–	ग	–	प	–	
कु	ट	ऽ	स	र	गु	ऽ	
ध	ध	–	ध	–	–	ध	
जा	ऽ	ऽ	अऊ	ऽ	ऽ	बि	
निध	पग	–	ग	नि	ध	नि	
लाऽ	सऽ	ऽ	पु	र	हे	ऽ	
प	ध	–	प	–	म	ग	
बै	ऽ	ऽ	हा	ऽ	ऽ	ऽ	
रे	सा	सा					
ऽ	ऽ	ऽ					
X			2		3		
1	2	3	4	5	6	7	
			ध़	सा	सा	–	
			र	इ	पु	र	
X			2		3		
रे	म	–	म	–	–	ग	
क	नि	ऽ	हा	ऽ	ऽ	स	
रे	सा	–	ध	सा	सा	–	
ही	ऽ	ऽ	घा	ऽ	ट	ऽ	
रे	म	–	म	–	–	ग	
सु	ऽ	ऽ	घर	ऽ	ऽ	हा	
रे	सा	सा	ग	–	प	–	
वे	ऽ	ऽ	दु	ऽ	रु	ग	

टिप्पणी

ध	–	–	ध	–	–	ध
ब	ऽ	स्	तर	ऽ	ऽ	सो
निध	पग	–	ग	नि	ध	नि
हेऽ	ऽऽ	ऽ	पै	ऽ	ऽ	ऽ
प	ध	–	प	–	–	–
ज	नि	ऽ	यां	ऽ	ऽ	ऽ
ग	प	प	–	ध	सां	–
नां	ऽ	दे	ऽ	गां	ऽ	ऽ
सां	–	–	रेंसां	नि	–	–
वे	ऽ	ऽ	नऽ	वा	ऽ	ऽ
ध	–	प	–	प	नि	ध
ग	ऽ	ढ़	ऽ	ध	नि	ऽ
प	–	म	म	ग	रे	सा
या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

X			2		3	
सा	–	रे	–	प	–	–
म	ऽ	हुँ	ऽ	पा	ऽ	ऽ
प	ध	–	–	प	म	ग
वे	ऽ	ऽ	प	ड़	व	ऽ
–	रे	–	ग	–	रे	–
तो	ऽ	रे	ऽ	भुं	ई	ऽ
–	सा	–	सा	–	रे	–
यां	ऽ	ऽ	जय	ऽ	हो	ऽ

टिप्पणी

प	–	–		प	ध	–	–
जय	ऽ	ऽ		हो	ऽ	ऽ	ऽ
प	म	ग		–	रे	–	ग
छ	त्ती	स		ऽ	ग	ऽ	ढ़
–	रे	–		–	सा	–	–
ऽ	भु	ई		ऽ	यां	ऽ	ऽ
–	–	–		–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

पाठगत प्रश्न 6.5

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. ''अपरा पैरी के धार'' गीत के उद्देश्य को संक्षेप में लिखिए।
2. दिए हुए छत्तिसगढ़ के लोकगीत की पार्श्वभूमि को संक्षेप में लिखिए।
3. इस लोक गीत को कौन गाता है?

टिप्पणी

(च)

राजस्थानी लोकगीत

यह राजस्थानी लोकगीत है। यह गीत प्राय: कालबेलियों के द्वारा पारम्परिक मेलों में गाया जाता है। यह राजस्थान के प्रचलित लोकगीतों में से एक गीत है। नाग पंचमी, वीर पुरी तथा गोगा नवमी पर भी यह गीत गाया जाता है। गीत के साथ नृत्य भी किया जाता है। यह एक शृंगार रस गीत है। राजस्थान के हर शहर व गांवों में इसका प्रचार प्रसार है।

यह गीत प्राचीन काल से चला आ रहा है। प्राचीनकाल में राजा महाराजा इसे अपने मनोरंजन के लिए सुना करते थे। तथा आज भी यह नई पीढ़ी के लिए मनोरंजन का प्रतीक है।

कालबेलिया हिन्दुओं के सभी तीज त्यौहार और मेले मनाते हैं। यह गीत विशेष तौर पर मेले में गाया जाता है। यह गीत पूरे भारत तथा देश–विदेशों में प्रचलित है। प्रस्तुत गीत के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

सोने री धरती जठै चाँदी रो आसमान
रंग रंगीलो रस भरीयो म्हारो प्यारो राजस्थान।

स्थायी

अरररररररर.........र

रे कालियो कूद पड़ियो मेला में,
साइकल पन्चर कर लायो
अररररररर.........र

1. जयपुर जाइजे कबजो लाइजे,
कबजो लाल बूटी को...
अररररररर.........र

2. दो दिन डब जा रे डोकरिया
छोरी म्हारी बाजरियो काटे
अररररररर.........र

टिप्पणी

3. रे घोडी छप्परे मे छुप जा रे,
छोरी तनै लेबाणो आयो।
अरररररर.....र

4. रे काजल टीकी के नखरे में,
छोरी म्हारी मर मत जाइजे रे,
अरररररर.....र

5. रे छोरी झटक मटक मत चाल
कमर में लचको पड़ जासी
अरररररर.....र

रे कालियो कूद पड़ियो मेला में....
साइकल पन्चर कर लायो.....
अरररररर.....र

स्वरलिपि

ताल - कहरवा

(8 मात्रा)

गंगं	गं	रें रें रें	गं – – गंगं	पं गं पं गं	रे –	गं रें गं रें निध निध प
सोने	री	ऽ ध र	ती ऽ जठे चांदी	रो ऽ ऽ ऽ	आस्	मा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽऽ न
रेंरें	रें –	रें नि	रें रें – सं	– सं –		गं रं सां
रंग	रंगीले	ऽ ऽ	रस भरी	म्हारो थारो		रा जा स्थान

स्वरलिपि

स्थायी

X				0				X				0			
सा	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
अ	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	र	ऽ
–	–	–	–	–	–	–	–	सां	–	सां	–	–	सां	–	सां
र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	क	ऽ	लि	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ऽ
ध	–	–	–	सां	–	–	–	–	–	–	ध	प	–	–	–
कू	ऽ	ऽ	द	प	ऽ	डि	ऽ	यो	ऽ	मे	ऽ	ऽ	ऽ	ला	ऽ

X				0				X				0			
प	–	–	–	–	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–
ऽ	ऽ	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	साऽ	ऽ	ऽ	ऽ	क	ऽ	ऽ	ल
ध	–	–	–	–	–	सां	–	–	–	–	–	ध	–	–	–
पन्	ऽ	ऽ	ऽ	च	ऽ	र	ऽ	क	र	ऽ	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ
सां	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सां	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
अ	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	र	ऽ

सभी अंतरों की स्वरलिपि स्थायी के समान है।

पाठगत प्रश्न 6.6

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. यह गीत ..... के प्रचालते लोकगीतों में से एक है।
2. इस गीत के साथ ..... भी किया जाता है और यह ..... रस का गति है।
3. यह गीत विशेष रूप से ..... में गाया जाता है।

आपने क्या सीखा

1. इस लोकगीत के पाठ में जनसाधारण तथा जनजाति के लोगों की शैली तथा पृष्ठ भूमि को बताया है।
2. गढ़वाली लोक गीत उत्तरांचल के मेलों तथा पर्वों में गाए जाते हैं।
3. दिया हुआ हरियाणवी लोकगीत हर मौसम तथा अवसर पर गाया जाता है।
4. यह गीत ''जिंदुआ'' के नाम से प्रचलित है।
5. सारीगान, बंगाल तथा बंगलादेश का एक प्रचलित लोकगीत है।
6. छत्तीसगढ़ के लोकगीत का विषय छत्तीसगढ़ की महिमा का बखान है।
7. राजस्थान का लोकगीत प्राय: पारम्परिक मेलों में गाया जाता है।

पाठांत प्रश्न

1. गढ़वाली लोक-गीत की पृष्ठभूमि का वर्णन कीजिए।

टिप्पणी

2. हरियाणा के लोकगीत की आठ पंक्तियाँ लिखिए।
3. पंजाब के लोक गीत ''जिंदुआ'' का उद्देश्य समझाईए।
4. ''सारीगाना'' की पृष्ठ भूमि को लिखिए तथा संगति के वाद्यों के नाम लिखिए।
5. छत्तीसगढ़ तथा राजस्थान लोकगीतों की तीन विशेषताओं को लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

6.1

1. मेले, पर्व
2. युवक, युवती
3. तुकबंदी

6.2

1. ज्ञानी अथवा विद्वान व्यक्ति को अगर कोई अच्छी बात बताई जाए, तो वह उसे ठीक से अमल में लाकर उसका फायदा उठाता है, लेकिन मूर्ख व्यक्ति को अच्छी शिक्षा बारबार भी दी जाए, तो वह उसे ठीक से नहीं अपनाता है।
2. हर मौसम तथा हर उत्सव पर
3. सामाजिक तथा शिक्षाप्रद गीत

6.3

1. (i) जिंदुआ
2. (ii) आग का पेड़
3. (iii) पंजाबी भाषा

6.4

1. पश्चिम बंगाल, बंगलादेश
2. द्रुत
3. दोतारा तबला

6.5

1. छत्तीसगढ़ की महिमा का बखान किया गया है।

टिप्पणी

2. इसमें छत्तीसगढ़ की शोभा बढ़ाने वहाँ की नदियां पहाड़, खेत खलिहानों का विशेष वर्णन है, तथा कुछ मुख्य जिलां का वर्णन है।

3. इस लोक गीत को किसी भी जाति के स्त्री या पुरुष, समूह में गाते हैं।

6.6

1. राजस्थान

2. नृत्य, श्रृंगार

3. मेले में